RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2018-20

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्षः 74, अंक : 43 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 14 जनवरी , 2018
विक्रमी सम्वत् 2074, सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

11 JAN 2018

वर्ष–74, अंक : 42, 11-14 जनवरी 2018 तदनुसार 1 माघ सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

जीवन की रात में जिसे तू आ मिले वह भला

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

आरे अस्मदमतिमारे अंह आरे विश्वं दुर्मतिं यन्निपासि।
दोषा शिवः सहसः सूनो अग्ने यं देव आ चित्सचसे स्वस्ति।।
-ऋ० ४।११।६

शब्दार्थ-यत् = जब **निपासि** = तू रक्षा करता है, तो **अस्मत्** = हमसे **अमतिम्** = अज्ञान को, अकर्मण्यता को, नास्तिकता को **आरे** = दूर करता है **अंहः** = पाप को **आरे** = दूर करता है और **विश्वम्** = सम्पूर्ण **दुर्मतिम्** = दुर्मति को, दुर्बुद्धि को, बुरे विचारों को **आरे** = दूर कर देता है। **सहसः+ सूनो** = बलियों को झुकाने वाले **अग्ने** = सर्वाग्रणी प्रभो! वह **शिवः** = भाग्यवान् है **यम्** = जिसको तू **देवः** = देव **दोषा** = रात में **स्वस्ति** = सुखपूर्वक **आ+सचसे** = पूर्णरूप से आ मिलता है।

व्याख्या-मनुष्य जब पाप-प्रवाह में-भयङ्कर-प्रलयङ्कर पाप-प्रवाह में बहने लगता है, तब उसका कुछ ठिकाना नहीं रहता। आत्मा की भूल से इन्द्रियाँ विद्रोही हो गईं, आत्मा के वश में न रहीं, वे आत्मा से विमुख होकर चलने लगीं, आत्मा ने उनसे हार मान ली और उनके अधीन हो गया, तभी पाप का सूत्रपात हुआ। यजुर्वेद [४०।३] में लिखा है-

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः। तांस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः।।

घोर अन्धकार से घिरे आसुरी लोक (योनि, कर्मफल भोगने का स्थान) हैं, जो आत्मघाती जन हैं, वे मरकर उन लोकों को प्राप्त करते हैं, अर्थात् आत्मघाती को मरने के बाद भी और इस जन्म में भी प्रकाश और प्रकाशसाधनों से वञ्चित कर दिया जाता है। ऐसे अन्धकार में विलीन मनुष्य के सुकर्म जब जाग खड़े हों, तो-**'दोषा शिवः सहसः सूनो अग्ने यं देव आ चित्सचसे स्वस्ति'** = हे महाबल अग्रणी! वह भाग्यवान् है, जिससे आप इस अन्धकार में आ मिलते हैं।

एक सङ्केत और है-ध्यान रात में करना चाहिए। जब सब ओर सन्नाटा हो। किसी प्रकार का शोर-शराबा न हो। भगवान् रात के समय आ मिलते हैं, अकेला देखकर या भटका समझकर। आते ही भगवान् ने अमति=नास्तिकता दूर कर दी। जब वह आ मिला तो उसकी सत्ता का अपलाप, उसकी सत्ता से नकार कैसा? सारे पापों का मूल नास्तिकता है। यदि हमें भगवान् की सत्ता पर निष्ठा हो, उसकी न्यायकारिता, कर्मफल-प्रदातृता पर विश्वास हो, कार्यकारण के ध्रुव नियम पर दृढ़ धारणा हो, तो पाप हो ही नहीं सकता। भगवान् की सत्ता का अपलाप, उसकी सत्ता पर अविश्वास, उसकी न्यायकारिता पर अनास्था और कार्यकारण-सिद्धान्त पर अश्रद्धा हो, तो फिर पाप-पङ्क में धँसने में क्या विलम्ब है? अतः अमति के नाश के साथ भगवान् भक्त की पापभावना का भी अभाव कर देता है। पाप न रहे तो उनके संस्कार से होने वाले विचारों का रहना तो सम्भव ही नहीं। इस प्रकार भगवान् रक्षा करते हैं।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

वर्ष 2018 के नए कैलेण्डर मंगवाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, चौक किशनपुरा जालन्धर द्वारा प्रति वर्ष हजारों की संख्या में नव वर्ष के कैलेण्डर महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ देसी तिथियों सहित छपवाए जाते हैं। गत कई वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर आर्य जनता को उपलब्ध करवा रही है। इसी प्रकार सन् 2018 के महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र वाले कैलेण्डर भी आधे मूल्य पर आर्य जनता को दिए जाएंगे। इस वर्ष कैलेण्डर का मूल्य पाँच रुपये प्रति तथा 500 रुपए सैकड़ा रखा गया है। इसलिये सभी आर्य समाजें, शिक्षण संस्थाएं व आर्य बन्धु शीघ्र अति शीघ्र कैलेण्डर सभा कार्यालय से मंगवा कर अपने सदस्यों व इष्ट मित्रों में वितरित करें। कार्यालय का समय प्रातः 10.00 बजे से सायं 5 बजे तक है। रविवार को अवकाश रहता है इसलिये समय पर अपना व्यक्ति भेज कर कैलेण्डर मंगवाएं।

प्रेम भारद्वाज
सभा महामंत्री

त्वमग्ने राजा वरुणो धृतव्रतस्त्वं मित्रो भवसि दस्म ईड्यः।
त्वमर्यमा सत्पतिर्यस्य संभुजं त्वमंशो विदथे देव भाजयुः।।
-ऋ० २.१.४

भावार्थ-परमात्मा के अग्नि, देव, वरुण, मित्र, अर्यमा, अंशादि अनेक नाम हैं। इसी की यज्ञादि उत्तम कर्मों में स्तुति करनी चाहिये। वही सबको उनके कर्म अनुसार फल देने वाला है, और वही सेवनीय है।

सत्यविद्या और पदार्थविद्या का आदिमूल

ले.-डॉ. रामबाबू आर्य आर्य समाज हिण्डोन सिटी, ज़िला करौली (राज०)

जड़ वस्तु होने के कारण मानव बुद्धि किसी अन्य से प्रेरणा की अपेक्षा रखती है। बुद्धि मानव को शक्तिरूप में जन्म से ही प्राप्त होती है जबकि ज्ञान को वह अर्जित करता है। ज्ञान की उपलब्धि उसे स्वत: ही नहीं होती। ज्ञान प्राप्ति के बाद वह अपने अनुभव, मनन, चिंतन, संवेदन और बुद्धि के द्वारा उसे प्राप्त ज्ञान का विकास कर सकता है। पशु जहाँ अपने स्वाभाविक ज्ञान से ही अपना सारा जीवन व्यतीत करते हैं क्योंकि वे भोग योनि के जीव हैं जबकि मानव कर्म-योनि तथा भोग-योनि (उभय योनि) का जीव है जिसे विकास करने का अवसर प्राप्त है। मनुष्य बुद्धिपूर्वक स्वतन्त्रता से काम कर सकता है, उसे विद्या प्राप्ति का अवसर मिलता है।

मनुष्य जैसे भी हो समाज से ज्ञान ग्रहण करता है। आहार, निद्रा, भय, मैथुन तो पशुओं की भांति मानव में भी समान होते हैं, किन्तु नैमित्तिक ज्ञान ग्रहण करने की ईश्वर की प्रदत्त शक्ति उसे पशुओं से भिन्न करती है। वस्तुत: नैमित्तिक ज्ञान के बिना स्वाभाविक ज्ञान कभी सार्थक नहीं होता। सूर्य के प्रकाश अथवा दीपक के प्रकाश के बिना आँख नहीं देख पाती, आकाश के बिना कान, वायु के बिना त्वचा, जल के बिना जिह्वा, पृथिवी के बिना प्राण का होना व्यर्थ है। ज्ञानेन्द्रियों को बाह्य सहायता की आवश्यकता पड़ती है, अर्थात् बिना बाह्य सहायता के ज्ञानेन्द्रिय अपना कार्य नहीं कर सकती। तब भला आन्तेन्द्रिय बुद्धि भी बाह्य सहायता के बिना कैसे कार्य कर सकती है।

जिस प्रकार ईश्वरीय व्यवस्था के अनुसार प्राकृतिक नियम से प्रत्येक ज्ञानेन्द्रिय से पूर्व उसका सहायक देवता उत्पन्न किया है, उसी प्रकार सर्वोत्तम एवं सूक्ष्म पदार्थों को जानने के साधन बुद्धि की सहायता के लिये कोई सहायक उत्पन्न नहीं करता ऐसे कैसे सम्भव था? अत: सृष्टि के प्रारम्भ में स्वाभाविक ज्ञान के साधन बुद्धि की सहायता के लिये सर्वज्ञ परमेश्वर द्वारा ज्ञान का दिया जाना आवश्यक एवं अनिवार्य है।

सूर्य के प्रकाश को वही देख सकता है जिसके पास आँख है, उसी प्रकार बिना स्वाभाविक ज्ञान के नैमित्तिक ज्ञान सम्भव नहीं। जिस प्रकार वर्तमान में हमने ज्ञान अपने माता-पिता तथा आचार्य से प्राप्त किया तथा हमारे माता-पिता तथा आचार्य ने अपने माता-पिता तथा आचार्य से ज्ञान प्राप्त किया। पीढ़ी दर पीढ़ी इस ज्ञान की श्रृंखला को जब सृष्टि के आदिकाल में अमैथुनी सृष्टि तक पहुंचाया जाये तो निश्चय ही उस समय परमेश्वर के अतिरिक्त कोई शिक्षक नहीं मिलेगा। अत: मनुष्य मात्र के कल्याण के लिये अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न मनुष्यों को परमेश्वर द्वारा वेद के द्वारा नैमित्तिक ज्ञान का दिया जाना युक्तिसंगत बैठता है।

'परा' वाणी आत्मा की मुख्य शक्ति रूप होती है। पश्यन्ति वाणी में शब्द और अर्थ एक रूप होते हैं, मध्यमा वाणी में शब्द और अर्थ विभक्त हो जाते हैं, किन्तु शब्द मन ही मन मण्डराते हैं। इसमें कण्ठ और तालु का व्यापार नहीं होता। इन तीनों वाणियों में ईश्वर की वाणी मुखर नहीं होती। जिन ऋषियों के चित्त तमस्, रजस् वृत्तियों से असंपृक्त होते हैं तथा जब वे अपने स्वच्छ, निर्मल, निर्दोष चित्त को परमेश्वर की सर्वज्ञता में तटस्थ करते हैं तो उनके निर्मल चित्त में परमेश्वर का ज्ञान अंकित होता चला जाता है। इस प्रकार मध्यमा वाणी द्वारा वेद उन चार ऋषियों (अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा) को प्राप्त हुए। फिर वैखरी वाणी द्वारा जिसमें कानाफूसी अथवा उच्च भाषण दोनों ही आते हैं, वेदों को लोक में प्रचारित किया।

सृष्टि की रचना (प्रकट स्वरूप) के बाद कभी भी ज्ञान का प्रादुर्भाव (जगत् की उत्पत्ति के साथ ही) इस सृष्टि में हुआ होगा। तब से ही ऋषियों ने उसके बाद के विद्वानों ने वेद को मनुष्य के अभ्युदय एवं नि:श्रेयस सिद्धि की प्राप्ति के लिये अपेक्षित सम्पूर्ण ज्ञान का अक्षय भण्डार माना है। ईश्वर सर्वज्ञ है और वेद सर्वज्ञ परमेश्वर द्वारा मानव के कल्याण के लिये प्रदत्त ज्ञान है, अर्थात् उसके (मनुष्य के) लिये सभी विषयों का अपेक्षित पूर्ण ज्ञान का भण्डार वेद होना चाहिये। वैसे सभी विषयों का समावेश विज्ञान-कर्म-उपासना-ज्ञान के अन्तर्गत हो जाता है।

एक जातियसमवाय को वर्ग कहते हैं। पृथक् रूप से मन्त्रों का निर्वचन प्रकरणानुसार ही करना चाहिये। जिससे कर्म ज्ञानादि विषय प्रकृष्टता से गृहीत हो वह प्रकरण शब्द का यौगिक अर्थ कहलाता है। अर्थात् कर्म प्रकरण से कर्मकाण्ड तथा ज्ञान प्रकरण से विज्ञानकाण्ड कहना सर्वथा समुपयुक्त होगा। कर्म, उपासना, ज्ञान का यथावत उपयोग लेना तथा तृण पदार्थों का साक्षात् बोध करना विज्ञान है। कई विद्वानों ने कई स्थलों पर ब्रह्मज्ञान तथा मोक्ष विषय में विज्ञान शब्द का प्रयोग किया है।

विज्ञान के अन्तर्गत दो विषय आते हैं-

(1) परमेश्वर का यथावत् ज्ञान और उसकी आज्ञा का पालन। इसके अन्तर्गत ईश्वर की आज्ञा का पालन आत्म विज्ञान, शरीर विज्ञान, समाजशास्त्र, नीतिशास्त्र आदि पर विचार किया जाता है। परमेश्वर का यथावत ज्ञान ब्रह्मविद्या का विषय है।

(2) उसके रचे हुए पदार्थों के गुणों का यथावत विचार करके उनसे कार्य सिद्धि करना। यह विषय भौतिक विज्ञान परक है जिसमें आधुनिक भौतिक, गणित, ज्योतिष, भूगोल, खगोल, जीव विज्ञान, वनस्पतिशास्त्र, परमाणु विज्ञान आदि समाविष्ट है। रसायनशास्त्र, चिकित्सा विज्ञान, शिल्प शास्त्र, कला कौशल, गृह निर्माण, विद्युतशास्त्र इसी में निहित हैं जिनका सम्बन्ध ईश्वर रचित पदार्थों पर यथावत विचार और उनसे कार्य सिद्ध करने से है।

उक्त दोनों विषयों में परमेश्वर का प्रतिपादन प्रथम एवं प्रधान है। यही वेदों का मुख्य तात्पर्य है। तभी वेद सब सत्य विद्याओं एवं पदार्थ विद्याओं का आदिमूल हैं जो परमेश्वर कृत हैं।

मन एवं इन्द्रिय-सन्निकर्ष से जीवात्मा को गुणों का प्रत्यक्ष होता है तथा गुण एवं गुणी का प्रत्यक्ष हो जाता है। उसी प्रकार सृष्टि में रचना विशेष आदि गुणों का प्रत्यक्ष हो जाने से गुणी परमात्मा का प्रत्यक्ष होता है। समाधि की प्रारम्भिक दशाओं में 'दिव्य प्रतिभा' जागृत हो जाती है। योगी को उन सभी विषयों का ज्ञान प्राप्त हो जाता है जिनका वह एकाग्रचित्त होकर ध्यान एवं चिंतन करता है। मूर्द्ध ज्योति में संयम करने से दिव्य शक्तियों का सहयोग पाकर योगी में दिव्य प्रतिभा जागृत होती है। तब योगी उन सभी विभूतियों को प्राप्त कर लेता है जो अत्यन्त संयम से प्राप्त होती हैं। जैसे सूर्योदय से पूर्वकालीन प्रभा सूर्योदय का ज्ञान कराती है, उसी प्रकार यह प्रातिम ज्ञान विवेक का पूर्व रूप ज्ञान का आभास कराता है। यह प्रातिम ज्ञान योगी को अतीत अनागत, सूक्ष्म, व्यवहित, दूरस्थ आदि वस्तुओं का ज्ञान करा देता है।

मध्यकाल में वेदों की प्रतिष्ठा को देखकर कुछ साम्प्रदायिक लोगों ने यह प्रचार किया कि वेदों में पराविद्या नहीं है। आचार्य शंकर ने वेदार्थ के जानने वाले को ब्रह्मवित् और परमार्थदर्शी कहा है।

उपनिषद् ब्रह्मविद्या के प्रमुख ग्रन्थ हैं, लेकिन उन्हें आदिमूल नहीं माना जा सकता। उपनिषदों का पराविद्या के ग्रन्थ होना निर्विवाद है, किन्तु उनमें अपराविद्या का कोई स्थान नहीं है। अपरा कोई निन्दात्मक शब्द नहीं है। विषयों के दृष्टिकोण से विद्या को दो भागों में बांटा गया है। प्रकृति से आत्मतत्त्व 'पर' है अत: उसका ज्ञान भी पराविद्या के नाम से कहा गया है। परमेश्वर से तृणपर्यन्त के अन्तर्गत परमेश्वर का यथावत ज्ञान 'पराविद्या' है और उसके रचे हुए पदार्थों पर यथावत विचार कर उनसे कार्य सिद्ध करना 'अपराविद्या' है। प्राकृत जगत् का ज्ञान उतना ही आवश्यक है जितना अध्यात्म जगत् का। मोक्ष प्राप्ति के लिये अधूरे नहीं पूर्ण ज्ञान की आवश्यकता होती है। ईश्वरीय ज्ञान की शब्दमयी अभिव्यक्ति के रूप में मनुष्य के लिये ज्ञान-विज्ञान के अक्षय भण्डार वेद केवल ब्रह्मविद्या के ग्रन्थ न होकर अपराविद्या के भी आदि स्रोत हैं। वेद जहां ब्रह्मविद्या के मूल हैं वहां वे मनुष्य के लौकिक अथवा लौकिक जीवन के लिये अपेक्षित ज्ञान के भण्डार भी हैं। अपराविद्या के ग्रन्थ होने पर वेदों में पराविद्या का निषेध नहीं हो जाता। परा तथा अपराविद्या दोनों मूल होने से वेद 'अभ्युदय' तथा 'नि:श्रेयस' दोनों की सिद्धि के लिये समानरूप से सहायक हैं। वेद का कौन सा

(शेष पृष्ठ 5 पर)

सम्पादकीय

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः

श्रीमद्भगवद्गीता की इस उक्ति का अनुसरण करते हुए धर्मवीर बाल हकीकत राय ने बसन्त पंचमी के दिन अपने धर्म और संस्कृति के लिए अपना बलिदान दिया था। जब बाल कहीकत के सम्मुख यह शर्त रखी गई कि या तो मुसलमान बन जाओ या मरने के लिए तैयार हो जाओ । ऐसी परिस्थिति में बाल हकीकत राय ने धर्म के लिए बलिदान देने में अपना हित समझा। बाल हकीकत राय को ये संस्कार अपने माता पिता से मिले थे। घर में प्रतिदिन गीता का पाठ किया जाता था। इसलिए बाल हकीकत राय की अपने धर्म के प्रति श्रद्धा थी। बसन्त पंचमी का पर्व हमें उसी वीर बालक की याद दिलाता है और प्रेरणा देता है कि हमें अपने धर्म, संस्कृति और मर्यादाओं के प्रति जागरूक रहना चाहिए। धर्म के मार्ग पर चलने से ही मनुष्य का जीवन सफल होता है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को उपदेश देते हुए यही समझाया था कि क्षत्रिय का धर्म अपने शत्रुओं का विनाश करना है। हे अर्जुन! जिन्हें तू अपना सम्बन्धी, मित्र तथा परिवार के सदस्य समझ रहा है वे सभी अधर्म के मार्ग पर प्रवृत्त हो गए हैं। इसलिए इनका नाश करने में ही भलाई है। इसी उपदेश का पालन करते हुए अर्जुन युद्ध करने के लिए प्रवृत्त होता है। गीता के इसी उपदेश का असर बाल हकीकत राय के जीवन पर पड़ा था।

बसन्त पंचमी का पर्व का पर्व जहां हमारे जीवन में नव उल्लास एवं खुशहाली लेकर आता है वहीं हमें अपने धर्म पर दृढ़ रहने की भी प्रेरणा देता है। वर्तमान में पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण युवा पीढ़ी अपनी संस्कृति, सभ्यता एवं नैतिक मूल्यों से अनभिज्ञ है। उनके अन्दर अपने धर्म के प्रति कोई श्रद्धा नहीं है। अपनी संस्कृति से अनभिज्ञ होने के कारण उनके अन्दर नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। इसी के कारण आज की युवा पीढ़ी पथभ्रष्ट हो गई है। इसलिए अगर हमें अपनी युवा पीढ़ी को सशक्त बनाना है, धर्म के मार्ग पर आरूढ़ करना है, राष्ट्रभक्त बनाना है तो उनके अन्दर वही भाव पैदा करने होंगे जो बालक हकीकत को बचपन में अपने माता-पिता से मिले थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे सम्मुलास में शतपथ ब्राह्मण का वाक्य उद्धृत करते हुए इसी बात पर बल दिया है कि मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरूषो वेद। जब एक बालक को अच्छे माता-पिता एवं अच्छे गुरू का सानिध्य मिलेगा तभी उसमें धार्मिक गुणों का समावेश होगा, नैतिक मूल्यों का समावेश होगा। इसलिए वीर हकीकत राय का बलिदान हमें प्रेरणा देता है कि हमें आज की युवा पीढ़ी में अपने राष्ट्र के प्रति राष्ट्रभक्ति का भाव भरना है।

बसन्त ऋतु के आगमन से जहां दीन दुःखी जन को साहस मिलता है कि हमारा जीवन सकुशल रहेगा, उसके साथ ही प्रकृति में अतुलनीय शोभा का विकास होता है। समस्त भूमि पीली चादर ओढ़े अपनी मन्द सुगन्ध समीर से जन मानस को आह्लादित कर देती है। वनस्पति जगत में सर्वत्र नवीन परिवर्तन होता दिखाई देता है। बसन्त पंचमी के पर्व का समय ऐसा आनन्द और उत्साह देने वाला होता है कि वायुमण्डल मोद और मद से भर जाता है। दिशाएं कलकण्ठा कोकिला आदि विविध विहंगमों के मधुर आलाप से प्रतिध्वनित हो उठती हैं। क्या पशु, क्या पक्षी और क्या मनुष्य सबका हृदय आनन्द से उद्वेलित होने लगता है। मनों में नई-नई उमंगें उठने लगती हैं। भारत के अन्नदाता किसान अपने दिन रात के परिश्रम को आषाढ़ी फसल के रूप में देखकर फूले नहीं समाते हैं। उनके गेहूं और जौ के खेतों की नवाविर्भूत बालों से युक्त लहलहाती हरियाली उनकी आँखों को तरावट तथा चित्त को अपूर्व आनन्द देती है। कृषि के सब कार्य इस समय समाप्त हो जाते हैं।

बसन्त पंचमी का पर्व हमें प्रेरणा देता है कि जिस प्रकार बसन्त के आने पर सम्पूर्ण प्रकृति में हलचल दिखाई देती है और उसमें परिवर्तन होता है, नव संचार होता है, चारों ओर फूल खिलने लगते हैं, उसी प्रकार हमारे मनुष्य जीवन में भी परिवर्तन होना चाहिए। हमारे जीवन में भी आनन्द और उत्साह का संचार होना चाहिए। अपनी कमियों और त्रुटियों को दूर करके उसमें सद्गुणों का संचार करना चाहिए। अगर जड़ प्रकृति ऋतुओं के अनुसार अपने में परिवर्तन कर सकती है तो हम तो चेतन प्राणी हैं। हम चेतन होकर भी अगर अपने अन्दर परिवर्तन नहीं करते, बदलाव नहीं लाते तो हमारा चेतन होने का क्या लाभ?

बसन्त पंचमी का दिन जहां ऋतु परिवर्तन की दृष्टि से अपना महत्व रखता है वहां अपने साथ एक महा बलिदानी, धर्मनिष्ठ भारतीय वीर की याद ताजा कर देता है। इस बलिदानी वीर का नाम हकीकत राय था, जिसने अपनी छोटी सी आयु में जीवन की हकीकत को समझा था, धर्म के साथ निभाया था और अपनी भारतीय परम्पराओं का मुख उज्जवल किया था। वीर हकीकत के जीवन चरित्र को पढ़ने से यह प्रेरणा मिलती है कि हमें अपने पूर्वजों के यशस्वी जीवन की प्राणपन से रक्षा करनी चाहिए। किसी में सह साहस न हो कि हमारे पूर्वजों का अपमान कर सके या हमारे धार्मिक सिद्धान्तों की खिल्ली उड़ा सके। आयु की दृष्टि से वीर हकीकत छोटे थे परन्तु अपने धर्म के प्रति उत्सर्ग का ऊंचा भाव निज बलिदान द्वारा जो प्रस्तुत किया वह किसी भी स्वाभिमानी व्यक्ति के लिए अत्यन्त प्रेरणा देने वाला है। वीर हकीकत को डराया गया, धमकाया गया, प्रलोभन दिए गए, अपना धर्म छोड़ने के लिए मजबूर करने की कोशिश की गई परन्तु वीर हकीकत उनके भय और प्रलोभन से जरा भी विचलित नहीं हुए। अपना धर्म परिवर्तन करके प्राणों को बचाने की कोई इच्छा प्रकट नहीं की।

धर्म पर बलिदान होने वाले ही धर्म के सच्चे प्रेमी और प्रचारक होते हैं, यह वीर हकीकत ने अपने बलिदान से सिद्ध कर दिया। 14 वर्ष की छोटी आयु होने पर भी जो भाव और श्रद्धा वीर हकीकत के अन्दर थी वह सचमुच प्रेरणादायक है। वीर हकीकत ने गीता के वचनों को सार्थक कर दिया कि। **स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः**।। अर्थात् अपने धर्म के लिए मर मिटना भी कल्याणकारी होता है, दूसरों के धर्म को अपनाकर हम सुख और शान्ति को प्राप्त नहीं कर सकते। आज हम थोड़े से भय और प्रलोभन के वशीभूत होकर अपने धर्म को तिलांजलि दे देते हैं। बसन्त पंचमी का पर्व हमें वीर हकीकत के गुणों को अपनाने की प्रेरणा देता है। वीर हकीकत ने अपने बलिदान से हमारा मार्गदर्शन किया है कि चाहे कितने ही कष्ट सहने पड़े, कितनी मुसीबतें सहन करनी पड़े हम अपने मार्ग से, अपने कर्त्तव्य से, अपने धर्म से कभी भी मुंह न मोड़े।

इस वर्ष बसन्त पंचमी का पर्व एवं वीर हकीकत राय का बलिदान दिवस 22 जनवरी को आ रहा है। इस पर्व को तथा वीर हकीकत के बलिदान दिवस को मनाते हुए हमें युवा पीढ़ी को बाल हकीकत के जीवन से प्रेरणा लेने का सन्देश देना है। किस प्रकार छोटी सी आयु में अपने धर्म के लिए बलिदान दिया जाता है? इसका प्रत्यक्ष उदाहरण वीर हकीकत राय का जीवन चरित्र है। बसन्त पंचमी का पर्व हमें सन्देश देता है कि हम धर्म के मार्ग पर चलते हुए अपने जीवन में सद्गुणों का विकास करें तथा अपनी संस्कृति और सभ्यता को अपनाएं। युवा पीढ़ी को धर्म के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करें यही वीर हकीकत राय का जीवन प्रेरणा देता है।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

उपजातिवाचक शब्द हटाने में आगे आऐं

-ले. पं० उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक गढ़निवास मोहकमपुर देहरादून

आत्मा की आवाज

ईश्वर ने इस विशाल सृष्टि में सम्पूर्ण प्राणियों के शरीरों की पृथक् पृथक् रचना की है जो जन्म से मृत्यु तक आकृतियां एक जैसी बनी रहती हैं। तथा उन्हीं में से एक मनुष्य जाति का निर्माण भी किया है, और जीवित रहने के साधन सबको एक समान बिना भेद भाव के उपलब्ध करायें है। अर्थात् मनुष्य की एक जाति मनुष्य जाति बनाई है।

मनुष्य के पूर्वजों ने मनुष्यों की योग्यतानुसार गुण कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था बिना भेद भाव के बनाई थी। कालान्तर में वर्ण व्यवस्था कल्पित जाति व्यवस्था कायम करके मनुष्य जाति को बांट दिया है। आज का लेख इस आवश्यक विषय पर प्रस्तुत कर रहा हूँ निपक्ष होकर विचार करें।

वर्ण व्यवस्था कर्म से थी तथा कथित जाति से नहीं थी

मानव पूर्व जन्मों के संस्कारों को लेकर पैदा होता है और वर्तमान में संस्कार व स्वभाव से एक विशेष गुण वाला हो जाता है, और उस गुण कर्म को वर्ण "संज्ञा" दी जाति है। वर्ण अधिक ज्ञान विज्ञान प्राप्त करके बदले जा सकते हैं, तथा बदल गये है। हमारे ग्रन्थो में इसके अनेक प्रमाण हैं।

ईश्वर ने मनुष्यों को एक समान पैदा किया है। वैदिक धर्म व वेदों में व्यवस्था थी कि जो जिस-जिस गुणो को लेकर पैदा होता है, राज्य व्यवस्था से उसको वहीं वर्ण मिलता था। जैसे एक पिता की चार सन्तानें हुई और उनमें से एक पढ़ने में तीव्र बुद्धि उसको ब्राह्मण, दूसरा लड़ने में वीरता उसको क्षत्रिय तीसरा व्यापार में तीव्र बुद्धि उसको वैश्य चतुर्थ सन्तान जो पढ़ने से व समझाने से मन्द बुद्धि हैं, उसको शूद्र का वर्ण दिया जाता था। शूद्र घर का कार्य व भोजन आदि बनाया करता था, किन्तु भेद भाव नहीं होता था। इस प्रकार वर्ण गुण कर्मानुसार बदलते रहते थे।

नाम के आगे प्रचलित उपजातिवाचक शब्द की समीक्षा

महाभारत युद्ध के बाद जब वैदिक विद्वान समाप्त हो गये, तब वर्ण शंकरसन्ताने पैदा होने लगी, और सामाजिक गुण कर्म वर्ण व्यवस्था धीरे-धीरे समाप्त होने लगी। और गुण कर्म के कार्यों से जाति व्यवस्था बनने लगी! और मानव समाज में ऊंच नीच और छुआछूत का व्यवहार होने लगा। सत्योपदेश ब्राह्मणों से संसर्ग न रहने से लोक अव्यवस्था फैल गई। मानव समाज में मूल में पोन्ड्रक, ओड, द्रविड, काम्बोज, यवन, शक, पारद, पद्दव, चीन, किरात, दरद, खश, आदि के नाम से प्रचलित हुई और संसार में जहां भी बसी वही अपना आधिपत्य जमा कर बैठ गई। जैसे द्रविड भारत के दक्षिण में यवन, शक, पारद, पश्चिम में डाकर अरब राष्ट्रों को बनाया इसके लिये प्रमाण रूप में ईरान के शाह अपने नाम से पूर्व (आर्य मिहर) शब्द लिखते हैं, जिसका अर्थ हैं आर्य कुल का सूर्य

इस प्रकार नागा भारत के असम क्षेत्र में जा बसे और शेष विश्व में जहां तहां आबाद हो गये। वह एक युग था विश्व के हर कोने में आर्य निवास करते थे, और भारत उनका केन्द्र था। किन्तु स्वार्थी लोगों ने द्रविड और आर्यों की अलग-अलग जाति बताकर सदा के लिये भारतीयों के दिलों में दरारें डाल दी। भारत में प्रचलित जातियों का मूल द्रविड और आर्य है इसे ही सब उपजाति फैली हुई है। नाम के आगे जातिवाचक शब्द लगाने से ऊंच नीच का व्यर्थ भेद भाव पनपता है, जबकि उपजाति का कोई निश्चित आधार नहीं हैं न ही प्राचीन इतिहास मिलता है। जातिवाचक शब्द लगाने वाले मनुष्य को यह भी मालूम नहीं होता कि इस उप जाति नाम का मूल क्या है, और कैसे नाम पड़ा बस, पीढ़ी दर पीढ़ी उपनाम लगाना परम्परा बन गई है। गम्भीरता से विचार करें।

जातिवाद से हानियां

उच्च जाति मानने से भेदभाव, ऊंच नीच व्यवहार से भारत वर्ष में बहुत हानियां हुई हैं। तथा कथित छोटी जाति का उच्च जाति वालों द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी बधुंआ की तरह शोषण किया गया, और शोषित वर्ग को प्रत्येक अधिकारों से वंचित किया गया, इससे दुखी होकर सामाजिक प्रतिष्ठा पाने के लिये विधर्मी बन गये। ईसाई व मुसलमान समुदाय में सम्मलित हो गये। फल स्वरूप भारत वर्ष में आज भी करोडों ईसाई व मुसलमानों के पूर्वज हिन्दु थे। आज के इस वैज्ञानिक वातावरण में भी जाति-पाति, छुआ छूत का चलन कैंसर बना हुआ है।

वर्तमान युग में जाति-पाति छुआ छुत का कोई औचित्य नहीं है।

आज तक जिन व्यवसाय के कारण भिन्न भिन्न जाति जैसे लोहार, टमटा, मिस्त्री, औजी आदि को छोटी जाति का माना जाता था। किन्तु अब उनके व्यवसाय को उच्च वर्ग के लोग करने लगे हैं। अब उच्च वर्ग को भेद भाव समाप्त करने में आगे आना चाहिए। इस विषय पर उदाहरण देना प्रासंगिक होगा। जो इस प्रकार से है। एक दिन रेल के डिब्बे में खादी की टोपी व धोती पहने समाज सुधारक जे. पी. कृपलानी सफर कर रहे थे, और उसी डिब्बे में एक तिलक धारी पड़ित जी भी बैठे थे। श्री जे. पी. कृपलानी जी ने अपना खाने का टिफन खोला और शिष्टाचार बस उन तिलक धारी पंडित जी से भी भोजन करने को कहा, किन्तु पंडित जी ने कहा महाशय आपकी जाति क्या है। कृपलानी जी मुस्कराने लगे, और कुछ सोच कर बोले पंडित जी मेरी एक जाति हो तो बतांऊ। पंडित बोले क्या मतलब है। कृपलानी जी मुस्कराकर बोले प्रातः जब शौचालय जाता हूँ और अपने को साफ करता हूँ उस समय भंगी बन जाता हूँ, दाढ़ी बनाते समय नाई, नहाने के बाद वस्त्र धोने से धोबी, पानी भरते समय कहार, हिसाब करते समय वैश्य, विद्यालय पढ़ाते समय ब्राह्मण, किसी पर अन्याय को बचाते समय क्षत्रीय बन जाता हूँ। अब आप ही बताइये मैं अपनी कौन सी जाति बतांऊ। किन्तु ईश्वर ने मनुष्य जाति का बनाया है। इसलिए मेरी जाति मनुष्य हैं अब आप ही विचार करें।

ईश्वर कृत जातियां

ईश्वर ने करोड़ों प्राणियों की रचना भिन्न-भिन्न शरीरों में रची हैं, जो शरीर जिस प्राणी को दिया है वह जन्म से मृत्यु तक बना रहता है जैसे, गाय, भैंस, बकरी, कबूतर, घोड़ा, गधा, सांप, पशु-पक्षी, बिच्छु आदि शरीरों की अलग-अलग रचना की है। वैसे ही एक जाति मनुष्य की भी बनाई है। जाति उसको कहते है, जो जन्म से मृत्यु तक जाति नहीं है। किन्तु शास्त्रों में मानव जाति में गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था बनाई है, किन्तु भेदभाव नहीं बनाया हैं जो हम पहले पैराग्राफ में स्पष्ट कर चुके हैं।

आर्य समाज संगठन समाज सुधारक संस्था से निवेदन

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने कथित जाति व्यवस्था को मानव जाति में फूट डालने वाला बनाया है। और वर्ण व्यवस्था पर बल दिया है। आज आर्य समाज को बने करीब 142 वर्ष हो गये हैं, किन्तु आर्य सदस्य, व आर्य नेतृत्व नेतागण, अपने नाम के आगे जातिवाचक शब्द लगाते जा रहे है। जो जाति व्यवस्था को और मजबूत कर रहा है। यदि आर्य समाज संगठन से जुड़े आर्य अपने नाम के आगे जातिवाचक शब्द हटाने में आगे आये तो मानव समाज को बहुत बड़ा सन्देश जायेगा।

भारतीयो (हिन्दुओं) को जागना ही होगा

1. भारत की गुलामी का कारण एक जातिवाद द्वारा आपसी फूट व अलगाववाद व राष्ट्र की उपेक्षा का कारण रहा है। फिर भी हम भारतीय जाग नहीं रहें है।

2. भारत वर्ष में करीब 21 करोड़ मुसलमान व ईसाई है, जिनमें इनके पूर्वज अधिकांश हिन्दु थे। यही अवस्था रही तो कालान्तर में हिन्दु अपने ही देश में अल्प संख्यक हो सकते है। फिर भी जाग नहीं रहें है।

3. जातिवाद की बीमारी का लाइलाज का कारण वर्तमान राजनीति भी बनी हुई है। जो वोट बैंक के लालच में दिनो-दिनों बढ़ रही है। फिर भी हम जाग नहीं रहे है।

4. हिन्दुओ के धर्मों में पाखण्डी धर्म सम्प्रदाय भारत में दिनों-दिन बढ़ रहे है और इनके कारनामे हमारे सामने है। फिर भी हम जाग नहीं रहे है।

5. ईश्वर ने मानव समुदाय की सुव्यवस्था हेतु वेदों का ज्ञान दिया था, और मानव को सुख शान्ति का मार्ग बताया था, किन्तु भारत में धर्म निपेक्ष कानून के प्रभाव से बुद्धिजीवी व समाज सुधारक, वर्ग भी धर्म के नाम पर अनेक मत मतान्तरों को पल्लवित होते देखकर भी असहाय होकर रह गये हैं। हम अपने ही देश में धर्म सापेक्ष के बजाए धर्म निरपेक्ष वातावरण पर चिन्तित नहीं हो रहें हैं। जाग नहीं रहें है।

पृष्ठ 2 का शेष सत्यविद्या और पदार्थविद्या...

भाग परारूप है तथा कौन सा अपरारूप यह निश्चय नहीं किया जा सकता, क्योंकि वेदमन्त्रों का क्रम परा या अपरा विद्याओं को मानकर पृथक्-पृथक् नहीं किया गया है।

संसार में कुछ लोग सुखी परिवार में जन्म लेते हैं, पूर्ण स्वस्थ एवं आनन्द भोगते हैं। उन्हें सुन्दर शरीर, उत्साहपूर्ण मन तथा सभी आवश्यक सामग्री आसानी से प्राप्त होती है तथा कुछ लोग जन्म से ही दुःखी होते हैं, अत्यन्त गरीब परिवार में जिसे दोनों समय का खाना भी उपलब्ध नहीं, अभावग्रस्त जीवन जीते हैं। कुछ शरीर के किसी अंग से विकलांग जन्म लेते हैं। यहां परमात्मा का कोई पक्षपात नहीं होता। अनादिकाल से जन्म-मरण को क्रम से प्राप्त वासना जाल ने प्रवृत्त जीवात्मा कर्मानुसार कर्मफल भोगने के लिये शरीरों को धारण करता हुआ प्रकृति के सम्पर्क में आता है। अपराविद्या (भौतिक विज्ञान) की सहायता से ही भौतिक तत्त्वों के यथार्थ स्वरूप को जानकर वर्तमान एहिक जीवन की सुख-सुविधाओं अनेक उपकरणों की उपलब्धि से उनका समुचित उपयोग सम्भव है। मोक्ष प्राप्ति साधन रूप शरीर की उपेक्षा नहीं की जा सकती। अतः जन्म-जन्मान्तर की चिन्ता करने से पहले वर्तमान जीवन की आवश्यकताओं को एकत्रित करना हमारा प्रथम कर्त्तव्य बनता है। अतः समस्त जगत् का ज्ञान प्राप्त करना परम आवश्यक है। इसे जिस ज्ञान से प्राप्त किया जा सकता है वह अपराविद्या है।

वैसे तो साधन से साध्य का स्थान ऊँचा होता है। शब्द साधन है और अर्थ साध्य। अब यदि कोई शब्द किसी अर्थ का बोध न कराये तो वह शब्द निरर्थक अथवा व्यर्थ कहा जाता है। अब यदि शब्द ही अर्थ का बोध कराता है तो अर्थ की अपेक्षा शब्द ही श्रेष्ठ माना जायेगा। मुण्डक उपनिषद् ने पराविद्या को अविनाशी ब्रह्म का बोध कराने वाली तथा उसे प्राप्त करने वाली विद्या माना है। अर्थात् वेद ने शब्दों द्वारा जिस अर्थ का प्रतिपादन किया है उस अर्थ को जिस विद्या से जाना जाता है वह 'पराविद्या' कहलाती है। जबकि सम्पूर्ण ऋचाएं उस अविनाशी परमेश्वर का ज्ञान कराती हैं जिसमें समस्त चराचर जगत् स्थित है। जिसने उस परमेश्वर को नहीं जाना उसका वेद पढ़ना व्यर्थ है। महर्षि दयानन्द ने अपराविद्या (सृष्टि विद्या) को पुष्पस्थानीय मानकर पराविद्या को फलस्थानीय कहा है।

उपनिषदों में आख्यायिका के रूप में, गुरु के रूप में यम तथा नचिकेता के रूप में शिष्य का वर्णन किया गया है। वस्तुतः ये कोई ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं है। 'नचिकेता' एक जिज्ञासु आत्मा का ग्रहण किया गया है तथा 'यम' से परमात्मा का ग्रहण होता है। नचिकेता जिस समस्या का समाधान चाहता है वह केवल एक नचिकेता की समस्या नहीं, अपितु जीवात्मा की समस्या है। वह सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक है। इसलिये उसका समाधान भी एक सामान्य पुरुष नहीं, अपितु पूर्ण पुरुष ही कर सकता है जिसे कभी हम यम, कभी अन्तक, कभी मृत्यु, कभी वैवस्वत आदि नामों से पुकारते हैं, जो अजर अमर परमेश्वर के नाम हैं। इसके विपरीतार्थक मर्त्य पद से जीवात्मा का ग्रहण होता है।

परमेश्वर के सर्वव्यापक (विभु) तथा देशकाल से अपरिच्छिन्न होने पर भी अज्ञान के कारण जीव की परमेश्वर से दूरी बनी रहती है। इसी दूरी के कारण जीवात्मा को उससे साक्षात् नहीं होता। यह अज्ञानजनित दूरी को ज्ञान द्वारा ही दूर किया जा सकता है। निखचव परमात्मा जो कि व्यापक है का व्याप्य जीवात्मा से व्याप्य-व्यापक नित्य सम्बन्ध है। अनादि परमात्मा को शुद्ध अन्तःकरण विद्या और योगाभ्यास से युक्त पवित्रात्मा ही प्रत्यक्ष कर सकता है। योगाभ्यास और विज्ञान के बिना उसका प्रत्यक्ष सम्भव नहीं। ज्ञान तथा शुद्ध मन से योगी अतीन्द्रिय विषय का प्रत्यक्ष बन सकते हैं।

मानव का ज्ञान अज्ञान मिश्रित होता है, अतः वह निर्भ्रान्त कभी नहीं हो सकता। किन्तु ईश्वर में भ्रम, प्रमाद, विप्रलिप्सा आदि दोष कभी भी नहीं हो सकते। वेदों में जो वाक्य रचना है, पद व पद समूह की जो आनुपूर्वी है वह सब बुद्धि पूर्वक है। संसार में वेदों के अतिरिक्त अन्य कई ग्रन्थों की रचना हुई और समय समय पर उनमें से कई नष्ट भी हुआ, परन्तु परमेश्वर का वाक्य कभी पुराना नहीं पड़ता और कभी नष्ट नहीं होता। सभी शास्त्रों का मूल वेद है। वैदिक वाङ्मय में जितने भी महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं वे किसी न किसी प्रकार वेदों से जुड़े हुए हैं। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष सभी छः वेदांगों के अन्तर्गत आते हैं। न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, वेदान्त और मीमांसा वेद के उपांग हैं जो दर्शन और विज्ञान के विषयक हैं। आयुर्वेद, धनुर्वेद, अर्थवेद और गन्धर्ववेद ये उपवेद हैं। सारे उपनिषद् ईशोपनिषद् का विस्तार कहलाते हैं और ईशोपनिषद् स्वयं ही यजुर्वेद का चालीसवां अध्याय है। ब्राह्मण ग्रन्थ वेद के व्याख्यान हैं। श्रौत और गृह्यादि सूत्र ग्रन्थ वेद के द्वारा निर्दिष्ट कर्मकाण्ड में सहायक ग्रन्थ हैं, परन्तु इनकी रचना मानवों के द्वारा की गई है। अतः वे वेद के समकक्ष नहीं हो सकते।

जिस प्रकार किसी संगठन, संस्था अथवा समाज के संचालन के लिये एक विधान होना आवश्यक है कोई शिल्पी किसी यन्त्र का निर्माण करके उस विषय की जानकारी देने के लिये एक ग्रन्थ की रचना करता है, उसी प्रकार यह कैसे सम्भव है कि परमेश्वर सृष्टि तो बनाये और उसके संचालन का विधान नहीं बनाये। बिना विधान के विधारण सम्भव नहीं। सर्वप्रथम मानव का इस सृष्टि पर प्रादुर्भाव हुआ तो वह सर्वथा अनभिज्ञ था। न वह पदार्थों के नाम जानता था और न ही उनके गुण दोषों से परिचित था। वह उनका उपयोग कैसे करे, इस विषय में उसे पता नहीं था। ऐसी अवस्था में सृष्टि के रचयिता एवं संचालक परमात्मा ने चराचर जगत् के सम्बन्ध में अपेक्षित जानकारी देने के लिये वेद का ज्ञान चार ऋषियों (अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा) के माध्यम से दिया। (क्रमशः)

स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर का 58वां गायत्री महायज्ञ

आप को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि स्त्री आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर में दुःख निवारक सुखवर्षक पवित्र गायत्री महायज्ञ दिनांक 14 जनवरी 2018 दिन बुधवार से 13 फरवरी 2018 तक लगातार एक मास बड़ी श्रद्धा व उत्साह से आयोजित किया जा रहा है जिसकी पूर्णाहुति 13 फरवरी 2018 को होगी। कार्यक्रम का समय दोपहर 2:30 से 4:30 बजे तक रहेगा। इस अवसर पर 14 जनवरी से 20 जनवरी तक स्वामी विश्वानन्द जी-मथुरा, 21 जनवरी से 25 जनवरी तक श्री सुरेश कुमार जी शास्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय जालन्धर, 28 जनवरी से 3 फरवरी तक आचार्य राजू जी वैज्ञानिक (दिल्ली) तथा 6 फरवरी से 13 फरवरी तक महात्मा चैतन्यमुनि जी (सुन्दर नगर) को आमन्त्रित किया गया है। विशेष पूर्णाहुति समारोह दिनांक 13 फरवरी 2018 को होगा। यज्ञ के ब्रह्मा पं. सत्य प्रकाश शास्त्री एवं पं. बुद्धदेव वेदालंकार जी होंगे। आप सभी सपरिवार इष्ट मित्रों सहित इस कार्यक्रम में सादर आमन्त्रित हैं।

सुशीला भगत प्रधाना स्त्री आर्य मॉडल टॉऊन जालन्धर

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

यो मृळयाति चक्रुषे वयं स्याम वरुणे अनागाः।
अनुव्रतान्यदितेर्ऋधन्तो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।। -ऋ० ७.९७.७

भावार्थ-हम जीव अनेक अपराध करते हैं तो भी वह दयालु पिता, हमें अनेक प्रकार के भोज्य पदार्थ देता ही रहता है। वही प्रभु हमें उत्तम वेदानुयायी विद्वान् भक्त महापुरुषों का सहवास भी देता है। उन महात्माओं के उपदेशों से हम भी प्रभु के अनन्य भक्त बनकर कल्याण के भागी बन जाते हैं।

सत्यार्थ प्रकाश में आदर्श राजनीति व राजधर्म

ले०-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

(गतांक से आगे)

जो राजा दण्ड को अच्छे प्रकार चलाता है वह धर्म, अर्थ और काम की सिद्धि को बढ़ाता है और जो विषय में लम्पट, टेढ़ा, ईर्ष्या करने वाला वह क्षुद्र नीच बुद्धि न्यायाधीश राजा होता है वह दण्ड से ही मारा जाता है।

कर संग्रह-वार्षिक कर आप्त पुरूषों द्वारा ग्रहण करे और जो सभापति रूप राजा आदि प्रधान पुरूष हैं वे सब वेदानुकूल होकर प्रजा के साथ पिता के समान वर्तें।

विविध विभागाध्यक्षों की नियुक्ति-

राजा मेधावी, प्रतिभाशाली योग्य विद्वान् अध्यक्षों को आवश्यक-तानुसार विभिन्न विभागों में नियुक्त करे। वे विभागाध्यक्ष इस राजा के द्वारा नियुक्त अन्य सब अपने अधीन कार्य करने वाले कर्मचारी लोगों का निरीक्षण किया करें।

अब शासन किस प्रकार का हो, इस विषय पर विचार करते हैं। एक-एक गांव में एक-एक प्रधान पुरूष को रखे। उन्हीं दश ग्रामों के ऊपर दूसरा, उन्हीं बीस गांवों के ऊपर तीसरा, उन्हीं सौ ग्रामों पर चौथा और उन्हीं एक सहस्त्र ग्रामों पर पांचवां पुरूष रखे।

इसी प्रकार प्रबन्ध करे और आज्ञा देवे कि वह एक-एक ग्रामों के प्रति ग्रामों में नित्य प्रति जो-जो दोष उत्पन्न होवे उन-उन को गुप्तता से दश ग्राम के प्रति को विदित कर देवे और वह दश ग्रामों का वर्तमान बता देवे।

उन पूर्वोक्त अध्यक्षों के गांवों से सम्बद्ध राज कार्यों को भी राजा का एक विश्वासपात्र प्रमुख मंत्री आलस्य रहित होकर देखे।

राजा बड़े-बड़े प्रत्येक नगर में एक-एक नक्षत्रों के बीच में चन्द्रमां है इस प्रकार विशाल और देखने में प्रभावकारी, भयकारी अर्थात् जिसे देखकर या जिसका ध्यान करके राजाओं में नियमों के विरूद्ध चलने में भय का अनुभव होवे। जिसमें सब राजकार्यों के चिंतन और प्रजाओं की व्यवस्था और कार्यों के संचालन का प्रबन्ध होवे ऐसा ऊंचा भवन अर्थात् सचिवालय बनावे।

रिश्वत खोर राज कर्मचारियों को कठोर दण्ड देवे।

पापी मन वाले ये जो रिश्वतखोर और ठग राजपुरूष यदि काम कराने वालों से और मुकद्दमें वालों से फिर भी धन अर्थात् रिश्वत ले ही लें तो उनका सब कुछ हरण करके राजा उन्हें देश निकाला दे दे।

राज कर्मचारियों को वेतन का भुगतान-

राजा राज कार्यों में नियुक्त राज पुरूषों व स्त्रियों और सेवक वर्ग की पद और काम के अनुसार प्रतिदिन की कर्म स्थान और जीविका निश्चित कर दे।

राजा को व्यापारियों से भी कर लेना योग्य है।

जैसे राजा और कर्मों का कर्त्ता राजपुरूष और प्रजाजन सुख रूप फल से युक्त होवे वैसे विचार करके राजा तथा राज्य सभा राज्य में कर स्थापन करे।

कर की मात्रा अधिक नहीं होनी चाहिए।

जैसे जोंक बछड़ा और भंवरा थोड़े-थोड़े भोग्य पदार्थ ग्रहण करते हैं वैसे राजा प्रजा से थोड़ा-थोड़ा कर वार्षिक लेवे।

शासक को नीति में निपुण होना चाहिए। इस विषय में कहा गया है-

राजा ऐसा प्रयत्न करें, कोई शत्रु अपने छिद्र अर्थात् निर्बलता को न जान सके और स्वयं शत्रु के छिद्रों को जानता रहे जैसे कछुआ अपने अंगों को गुप्त रखता है वैसे शत्रु के प्रवेश छिद्र को गुप्त रखे।

जैसे बगुला ध्यानावस्थित होकर मछली के पकड़ने को ताकता है वैसे अर्थ संग्रह का विचार किया करे। द्रव्यादि पदार्थ और बल की वृद्धि कर शत्रुओं को जीतने के लिए सिंह के समान प्रयत्न करे, चीते के समान छिपकर शत्रुओं को पकड़े और सपीम में आये बलवान, शत्रुओं से खरगोश के समान दूर भाग जाये और पश्चात् उनको छल से पकड़े।

जो राजा मोह से, अविचार से अपने राज्य को दुर्बल करता है वह राज्य से और बन्धु सहित जीने से पूर्व ही शीघ्र नष्ट भ्रष्ट हो जाता है।

राजादि पुरूषों को यह बात ध्यान में रखने योग्य कि जो स्थिरता, शत्रु से लड़ने के लिए जाना, उनसे मेल कर लेना, दुष्ट शत्रुओं से लड़ाई करना, दो प्रकार की सेना करके स्वविजय कर लेना और निर्बलता में दूसरे प्रबल राजा का आश्रम लेना वे छः प्रकार के कार्य विचार कर करने चाहिए।

राजा को युद्ध स्थल पर सेना को कैसे जमाना है यह व्यूह रचना जाननी चाहिए। दण्ड के समान सेना को चलावे जैसा शकट अर्थात् गाड़ी के समान, वराह जैसे सूअर एक दूसरे के पीछे दौड़ते हैं कभी सब मिल कर झुण्ड हो जाते हैं वैसे, जैसे मगर पानी में चलते हैं वैसे सेना को चलावे, जैसे सुई का अग्रभाग सूक्ष्म पश्चात् स्थूल और उनसे सूत्र स्थूल होता है वैसी शिक्षा से सेना को बनावे, नील कण्ठ ऊपर-नीचे जैसे झपटा मारता है इस प्रकार सेना को लड़ावे।

जिधर भय विदित हो उसी ओर सेना को फैलावे, सब सेना के पतियों को चारों ओर रख कर पद्म ब्यूह अर्थात् पद्माकार चारों ओर से सेनाओं को रखकर मध्य में आप रहे।

किसी समय उचित समझे तो शत्रु को चारों ओर से घेर कर रोक रखे और इसके राज्य को पीड़ित कर शत्रु के चारा, अन्न, जल और इन्धन को नष्ट दूषित कर दे।

सत्यार्थ प्रकाश में न्याय व्यवस्था पर भी मनुस्मृति के आधार पर पर्याप्त विचार हुआ है। न्याय में पक्षपात को स्थान नहीं है। चाहे पिता, आचार्य, मित्र, माता, स्त्री, पुत्र और पुरोहित ही क्यों न हो जो स्व धर्म में स्थित नहीं रहता वह राजा का अदण्ड्य नहीं होता अर्थात् जब राजा न्यायासन पर बैठ जाय और न्याय करे तब किसी का पक्षपात न करे किन्तु यथोचित दण्ड देवे।

मैं समझता हूँ कि इससे अधिक न्याय के विषय में और क्या कहा जा सकता है। इस विषय पर इतना अधिक लिखा गया है कि उसी पर एक बड़ा लेख लिखा जा सकता हैं। न्यायलय में बैठ कर न्यायाधीश को उसके धर्म का ध्यान रखना चाहिए। जिस सभा में अधर्म से घायल होकर धर्म उपस्थित होता है जो उसका शल्य अर्थात् तीरवत् धर्म के कलंक को निकालना और अधर्म का छेदन नहीं करते अर्थात् धर्मी को मान और अधर्मी को दण्ड नहीं मिलता उस सभा में जितने सभासद हैं वे सब घायल के समान समझे जाते हैं।

जिस न्यायालय में अधर्म की धर्म पर अन्याय की न्याय पर विजय होती है उसकी सभी लोग निन्दा करते हैं। राजसभा में पक्षपात से किये गये अन्याय का अधर्म चौथाई अधर्म के कर्त्ता को चौथाई साक्षी को प्राप्त होता है और चौथाई अंश शेष सब न्याय सभा के सदस्यों को तथा शेष चौथाई राजा को प्राप्त होता है अर्थात् इस बुराई के कारण सभी की बदनामी होती है। 30 दण्ड भी व्यक्ति की सामाजिक स्थिति तथा ज्ञान के अनुरूप हो। जैसे यदि विवेकी होकर कोई चोरी करता है तो उसे अविवेकी चोर से अधिक दण्ड मिलना ही उचित होगा। अधिक बुद्धिमान् तथा समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति को अधिक दण्ड मिलना उचित ही है। इसलिए मनुस्मृति में कहा गया है-

''ब्राह्मण को सामान्य व्यक्ति से 64 गुणा अथवा 100 गुणा अथवा 128 गुणा दण्ड होना चाहिए अर्थात् जितना ज्ञान और जितनी प्रतिष्ठा अधिक हो उसको अपराध में उतना ही अधिक दण्ड दिया जाना चाहिए।''

इसी प्रकार कुछ विवेकी होकर चोरी करे तो उसे सामान्य शूद्र से आठ गुणा, वैश्य को 16 गुणा और क्षत्रिय को 32 गुणा दण्ड देने का भी वर्णन मनु स्मृति में हुआ है।

मेरी दृष्टि में वैदिक राजनीति और राजधर्म से बढ़कर कोई दूसरी व्यवस्था नहीं है। इसलिए स्वामी दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास आठ में कहते हैं, 'कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मन-मतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुख दायक नहीं है। मुझे यह लिखने में प्रसन्नता है कि स्वामी की इच्छा को परमात्मा ने पूर्ण कर दिया है। यदि वर्तमान सरकार वैदिक राजनीति और राजधर्म का पालन कर शासन का विकेन्द्रीय करण कर देवे और देश की जनता योग्य धर्मात्मा जनप्रतिनिधियों को विधान सभा और लोक सभा में भेजने लग जाये तो देश पुन: अल्प समय में ही 'सोने की चिड़िया' नाम को सार्थक कर सकता है।'

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी का बलिदान दिवस मनाया गया

दिनांक 24-12-2017 रविवार आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर में हुतात्मा, मानव समाज के सर्वमान्य आर्य नेता, स्वतन्त्रता सेनानी, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के संस्थापक, जामामस्जिद दिल्ली से वेद मन्त्रों द्वारा हिन्दु मुस्लिम एकता का सम्बोधन देने वाले निर्भीक सन्यासी जी का बलिदान दिवस बड़ी श्रद्धा भक्ति, उत्साह से मनाया गया।

जिसकी अध्यक्षता आर्य समाज के माननीय प्रधान श्री ओम प्रकाश भाटिया जी ने की। मुख्यवक्ता पं. बनारसी दास शर्मा नवांकोट एवं हेम शास्त्री त्रिपाठी हिमाचल प्रदेश (चम्बा) थे।

श्रद्धानन्द महिला महाविद्यालय की पूर्व छात्रा शिवानी के मधुर भजनों के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ।

माता जगदीश रानी आर्य ने बेटियों का जिक्र करते हुए स्वामी जी द्वारा कन्या विद्यालय खोलने की बात कही।

आर्य भजनोपदेशक नरेन्द्र पंछी एवं शिवानी जी के मधुर भजनों ने सभी को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

हेम शास्त्री त्रिपाठी एवं बनारसीदास जी ने स्वामी जी की अनेकों घटनाओं की चर्चा करते हुए अपना अपना ओजस्वी वक्तव्य दिया।

पुस्तकालयाध्यक्ष संजय गोस्वामी जी ने कुशलतापूर्वक मंच संचालन किया। इस सुअवसर पर अमृतसर की सभी समाजों ने भाग लिया। आर्य समाज शक्तिनगर से श्री राकेश मेहरा, हीरालाल कन्धारी और उनके साथी। आर्य समाज लक्ष्मणसर के प्रधान श्री इन्द्रपाल आर्य जी, माडल टाऊन आर्य समाज के प्रधान श्री देशबन्धु धीमान, पुतलीघर आर्य समाज के मन्त्री विरेन्द्र शर्मा लारेंस रोड़ आर्य समाज से दमन शर्मा उपस्थित रहे।

इसके इलावा श्री शशीकोमल जी, बलराज जुली, सतीश महान, रविदत आर्य, राजकुमार विद्यालंकार (दिल्ली) पुरूषोतम चन्द शर्मा, पवन टण्डन, रमन वाही, अनु बहल, मनवीन कौर, विद्यासागर योगराज गुप्ता, आचार्य पवन शर्मा आदि लोग उपस्थित रहे। वैदिक प्रवक्ता डॉ. पवनकुमार त्रिपाठी जी ने आये हुए मेहमानों का धन्यवाद किया तत्पश्चात् प्रीति भोजन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

-डॉ. पी. के. त्रिपाठी वेदप्रचार मन्त्री, आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द

अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी का बलिदान दिवस मनाया

आर्य समाज दीनानगर की ओर से अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी का 91वां बलिदान दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसकी अध्यक्षता दयानन्दमठ के अध्यक्ष स्वामी सदानन्द जी महाराज ने की। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता, श्री भारतन्दु जी ओहरी, श्री यतीन्द्र शास्त्री जी, श्री रघुवीर सैनी जी, मास्टर योगेन्द्रपाल जी गुप्ता थे। दयानन्दमठ के शास्त्री निवास एवं शास्त्री किशोर जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर गीत प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के अन्त में स्वामी सदानन्द जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि उस समय स्वामी श्रद्धानन्द जी जिनका पूर्व नाम महात्मा मुन्शीराम था उनके सामने अनेकों चुनौतियां भी जिनका उन्होंने डर कर मुकाबलता किया। एक पिता, एक पुत्र, एक आचार्य कैसा होना चाहिए सारे गुण स्वामी श्रद्धानन्द जी में थे आजादी की लड़ाई में उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। इस अवसर पर आर्य समाज के सचिव रमेश महाजन, कोषाध्यक्ष राजेश महाजन, अरुण विज, वेद प्रकाश ओहरी, श्री गुरबचन आर्य, मास्टर तिलकराज जी, ईश्वर भल्ला जी, प्रेम भारत, गुरदासपुर एवं पठानकोट को आर्य समाजों के अधिकारी मौजूद थे। अन्त में ऋषि लंगर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

-रमेश महाजन मन्त्री आर्य समाज, दीनानगर

आर्य मर्यादा साप्ताहिक पढ़ें और दूसरों को पढ़ाएं तथा लाभ उठाएं।

"लुधियाना में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस"

लुधियाना स्त्री आर्य समाज दाल बाजार में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बड़ी श्रद्धा और धूमधाम से मनाया गया। बहनों ने बड़े जोश से अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का गुणगान किया। सर्वप्रथम प्रधाना इन्द्रा शर्मा ने सुचारू ढंग से यज्ञ करवाया फिर प्रभु भक्ति का भजन गाया। अनन्तर श्रद्धानन्द जी के जीवन पर प्रधाना जी ने विवेचन किया। तत्पश्चात् रमेश जी शास्त्री ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा वे ऐसे महान राष्ट्र भक्त संन्यासियों में अग्रणी थें, जिन्होंने ने अपना सारा जीवन वैदिक धर्म के प्रचार के लिए समर्पित कर दिया था। बाला गम्भीर ने जवानों की शहीदी का बखान करते हुए (लख-लख है प्रणाम अमर शहीदां नू) भजन गाया। मुख्य संबोधन जनक आर्य ने दिया। उन्होंने कहा श्रद्धा और आनंद की खान स्वामी श्रद्धानन्द जी थे। जो देश पर कुर्बान हो गए। उन्होंने कहा कि श्रद्धानन्द जी के गुणगाने से हममें भी वैसी ही वीरता, निडरता पैदा हो जाएगी। शशि आहूजा, बाला चोपड़ा, संयोगता महाजन ने 'स्वामी श्रद्धानन्द प्याया है, स्वामी श्रद्धानन्द वीर बलिदानी तेरे तो जमावा सदके' भजन गाए। अंत में सविता शर्मा ने एक गीत सुनाया (गोलियाँ सीने पर खाकर चल दिए, प्यास कातिल की बुझा कर चल दिए।) प्रधाना जी ने सभी बहन भाईयों का धन्यवाद किया।

-जनक आर्या महामंत्राणी, दाल बाज़ार

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया

शहीदों की यादों में लगेंगे हर वर्ष मेले।
देश धर्म पर मिटने वालों का यही बाकी निशां होगा।।

आर्य समाज, फोकल प्वाईट लुधियाना के तत्त्वाधान में 31 दिसम्बर 2017 रविवार को देश और धर्म पर बलिदान होने वाले शहीदों को श्रद्धा-अर्पित करने के लिए श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। प्रात: हवन यज्ञ के यजमान श्री कपिल वर्मा और श्रीमती मीनाक्षी अरोड़ा वर्मा (चण्डीगढ़) अपने पुत्र के साथ यजमान बने। सुयोग्य पुरोहित श्री महेश वाचस्पति जी ने यज्ञ सम्पन्न करवाया। श्रद्धांजलि सभा ईश्वर भक्ति के भजन के साथ प्रारम्भ हुई। श्रीमती मालती अग्रवाल जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला कि उन्होंने किस प्रकार आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्त्री जी से प्रेरणा पाकर देश-धर्म और आर्य समाज को अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार स्वामी श्रद्धानन्द जी की ही देन है।

आर्य समाज के पुरोहित श्री महेश वाचस्पति जी ने देश की स्वतन्त्रता के लिए हंसते-हंसते फांसी पर चढ़ने वाले पंडित राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्लाखान और उनके साथियों के कार्य की विस्तारपूर्वक चर्चा की और काकोरी षड़यन्त्र केस पर अपने विचार व्यक्त किए।

आर्य समाज के महामन्त्री श्री महेन्द्र प्रताप आर्य ने सिक्ख गुरुओं द्वारा दी गई शहादतों की विस्तारपूर्वक चर्चा करते हुए बताया कि श्री गुरु नानक देव जी से लेकर नौवें गुरु श्री तेग बहादुर जी तक जो शहादतें हुई वह अपने आप में सहन शक्ति की अनूठी मिसाल है। गुरु तेग बहादुर जी को लोहे के पिन्जरे में बंद करके इस्लाम स्वीकार करने के लिए मजबूर किया गया और सामने भाई मतीदास जी के जीवित ही आरे से चीर कर दोफाड़ कर दिया गया। भाई सतीदास जी के शरीर पर रूई लपेट कर जिन्दा जला दिया गया और भाई दयालदास जी को गर्म पानी की उबलती देग में बिठा छाले-छाले करके शहीद कर दिया गया और अन्त में श्री गुरु तेग बहादुर जी का सिर तलवार द्वारा धड़ से अलग करके शहीद कर दिया गया। गुरु गोबिन्द सिंह जी के दो बड़े साहिबजादे चमकौर के युद्ध में शहीद हो गये। माता गुजरी जी और दो छोटे साहिबजादों को पुराने नौकर गंगू की नमक हरामी से सूबा सरहिन्द वजीर खां ने गिरफ्तार कर लिया। अनेक प्रकार के प्रलोभन और डर दिखाने के बावजूद इस्लाम स्वीकार न करने पर जिन्दा ही दीवारों में चिनवा दिया गया।

गुरु गोबिन्द सिंह जी माता गुजरी जी और चारों साहिबजादों को शब्दों द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

श्रीमती गुरमीत कौर जी के दो शब्द:

1. इक सी माता गुजरी दे नाल सी दो पोते
2. जे चले हो सरहिन्द नूँ मेरे प्यारियो।।

श्री वीरेन्द्र जी ने एक शब्द का गायन किया:

1. वाटां लम्मियां ते रस्ता पहाड़ दा तुरे जांदे गुरु दे लाल जी
सरसा नदी ते विछोड़ा पै गया उस वेले दा सुन लो हाल जी।।

तीनों ही शब्द ऐसे मार्मिक और गम्भीर आवाज़ में गाये गये कि सारा वातावरण ही भावुक होकर अश्रुपूर्ण हो गया। सभी ने भाव विहवल और अश्रुपूर्ण नेत्रों से शहीदों की शहादत को स्मरण करते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

कार्यक्रम का समापन शान्ति पाठ, जयघोष और जलपान के साथ किया गया।

-महेन्द्र प्रताप आर्य महामन्त्री

आर्य समाज बस्ती दानिशमन्दा का 38वां वार्षिक उत्सव सम्पन्न

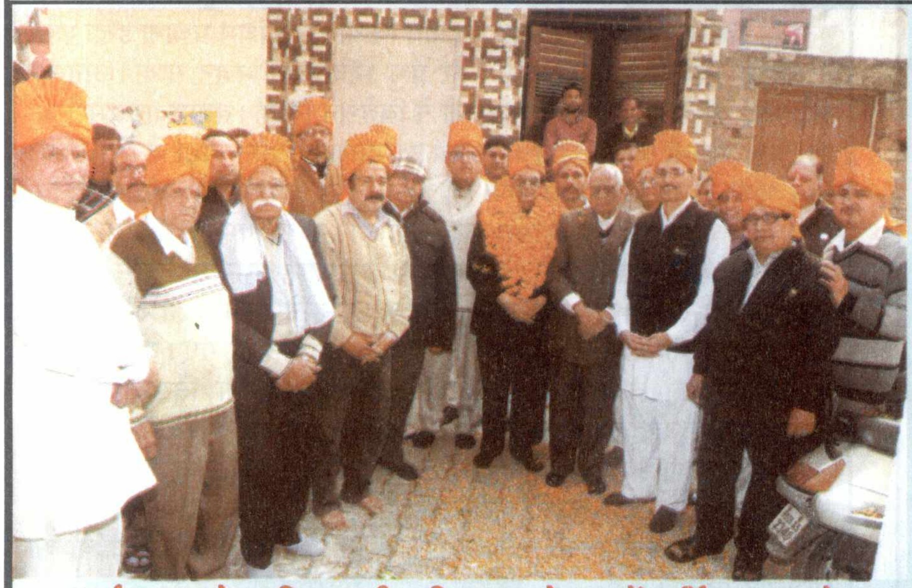

आर्य समाज वेद मन्दिर बस्ती दानिशमन्दा के 38 वें वार्षिक उत्सव के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा, सभा उपप्रधान श्री सरदारी लाल आर्य, सभा मन्त्री श्री सुदेश कुमार, आर्य समाज के प्रधान श्री यशपाल, श्री सतपाल, श्री अमरनाथ सूबेदार, श्री रामचन्द्र ठेकेदार, श्री रूड़ चन्द, श्री जयचन्द, तथा इससे पूर्व आर्य समाज की यज्ञशाला में हवन यज्ञ करते हुए आर्य जन

आर्य समाज वेद मन्दिर लसूड़ी मोहल्ला बस्ती दानिशमन्दा का 38 वां वार्षिक उत्सव दिनांक 17-12-2017 से 31-12-2017 तक बड़े उत्साह एवं धूमधाम से मनाया गया। दिनांक 17-12-2017 से 27-12-2017 तक प्रातः 5:00 से 7:30 बजे तक प्रभात फेरियां निकाली गई जिसमें सभी नगर निवासियों, परिवारों ने पूरा सहयोग दिया और पूरे उत्साह के साथ प्रभात फेरियों का स्वागत किया। ऋषि दयानन्द का गुणगान करते हुए सभी माताओं, बहनों और भाईयों ने सहयोग दिया और सभी परिवारों ने चाय और प्रसाद का लंगर लगाया। 24 दिसम्बर को विशाल शोभायात्रा निकाली गई जिसमें महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज के जयघोष करते हुए नगर का भ्रमण किया गया। दिनांक 27 दिसम्बर से 30 दिसम्बर तक रात्रिकालीन सत्संग शुरू किए गए जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भजनोपदेशक श्री सतीश सुमन के सुमधुर भजन तथा महोपदेशक श्री सुरेश शास्त्री जी के प्रवचन हुए। दिनांक 31-12-2017 रविवार को आर्य सम्मेलन का कार्यक्रम रखा गया। इस कार्यक्रम का शुभारम्भ सुबह 10:00 बजे हवन यज्ञ के साथ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा पं. विजय कुमार शास्त्री एवं पं. मनोहर लाल आर्य थे और मुख्य यजमान श्री हरि प्रकाश जी थे। यज्ञ के ब्रह्मा ने सभी यजमानों को आशीर्वाद दिया। यज्ञ के पश्चात ध्वजारोहण आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी एवं वरिष्ठ उपप्रधान बाबू सरदारी लाल जी आर्यरत्न के कर-कमलों द्वारा किया गया। आर्य समाज के सभी सदस्यों ने कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी का पुष्पमालाओं के द्वारा स्वागत किया तथा स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया।

सम्मेलन का मुख्य कार्यक्रम बाबू श्री सरदारी लाल जी आर्यरत्न की अध्यक्षता में हुआ। मुख्य कार्यक्रम का शुभारम्भ स्त्री सभा बस्ती दानिशमन्दा, स्त्री सभा भार्गव नगर की माताओं ने तथा श्री सतीश सुमन एवं सुभाष राही जी ने अपने मधुर भजनों से प्रभु भक्ति तथा ऋषि दयानन्द जी का गुणगान किया। पं. मनोहर लाल जी ने भजनों के द्वारा अपने विचार रखे। इसके बाद पं. सुरेश शास्त्री जी और पं. विजय कुमार शास्त्री जी का सुन्दर प्रवचन हुआ। मंच का संचालन आर्य समाज के प्रधान श्री यशपाल ने किया। कार्यक्रम के अन्त में बाबू श्री सरदारी लाल जी आर्यरत्न ने अध्यक्षीय उद्बोधन दिया और अपने सुन्दर विचारों द्वारा सबका मार्गदर्शन किया। इस अवसर पर श्री वेद आर्य जी, श्री सतपाल जी आर्य नगर अपने साथियों के साथ, श्री निर्मल कुमार बस्ती वावा खेल, श्री अमरनाथ प्रधान आर्य समाज गांधी नगर-2 श्री राज कुमार प्रधान आर्य समाज भार्गव नगर, श्री जयचन्द प्रधान संत नगर, श्री सम्मा राम प्रधान आर्य समाज दयानन्द चौक गढ़ा, श्री राजिन्द्र विज मन्त्री महर्षि दयानन्द मठ ढन्न मोहल्ला, श्री सत्यशरण गुप्ता प्रधान आर्य समाज अलावलपुर, श्री सुदेश आर्य मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा अन्य सभी आर्यजनों का सहयोग रहा। आर्य समाज के प्रधान श्री यशपाल जी ने सभी का धन्यवाद किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री पूर्णचन्द जी संरक्षक, श्री केवल कृष्ण, श्री कमल भारती एवं अन्य सभी सदस्यों ने पूरा सहयोग दिया।

-यशपाल प्रधान आर्य समाज बस्ती दानिशमन्दा

राहत सामग्री का 454 वां ट्रक रवाना

जम्मू कश्मीर के सीमान्त क्षेत्रों में जरूरतमन्द परिवारों की सहायता करने के उद्देश्य से हिंद समाचार समूह के द्वारा निरन्तर राहत अभियान चलाया जा रहा है। यह क्षेत्र आतंकवाद के कारण पीडित है। इसमें सीमान्त क्षेत्र के लोगों को मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। जरूरतमन्दों की सहायता के उद्देश्य के तहत श्री कुलदीप जैन जी लुधियाना के द्वारा 454 वां ट्रक राहत सामग्री का रवाना किया गया।

राहत सामग्री रवाना करते हुए पंजाब केसरी प्रमुख श्री विजय चोपड़ा, श्री कुलदीप जैन, श्री राजन चोपड़ा श्री रमेश पहलवान, राकेश गुप्ता, रक्षित पहलवान वीरेन्द्र शर्मा, इकबाल सिंह अरनेजा तथा श्री जे. बी. चौधरी

यह सामग्री 300 परिवारों को वितरित की गई। यह राहत सामग्री लाला जगत नारायण निष्काम सेवा सोसायटी तथा श्री कुलदीप जैन लुधियाना के सौजन्य से भेजी गई थी।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।